यीशु द्वारा क्षमा की शिक्षा

- पुत्र को पिता की क्षमा
- हमें क्षमा करना चाहिए
- पापियों को क्षमा

पुत्र को पिता की क्षमा

यीशु का एक दृष्टांत

यीशु बहुधा छोटी कहानियों द्वारा आत्मिक सच्चाई की शिक्षा देते थे, जिन्हें दृष्टान्त भी कहते हैं।

"किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छुटके ने पिता से कहा, 'सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझको दे दीजिए।' पिता ने अपनी सम्पत्ति दोनों पुत्रों में बांट दी। और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।

"और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पहुंचा। उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे, और उसे कोई कुछ नहीं देता था। जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगाः 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा, "पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले।" तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला।

"वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहाः 'पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।'

"परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; 'झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल कर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पावों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनावें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनन्द करने लगे।

"परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उसने गाने और नाचने का शब्द सुना। और उसने एक दास को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' दास ने उससे कहा, 'तेरा भाई आया है और पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिए कि उसे भला चंगा पाया है।' यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा; परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं इतने वर्षों से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली। तो भी तूने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिए तूने पला हुआ बछड़ा कटवाया।' पिता ने पुत्र से कहा, 'पुत्र तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी उठा है; खो गया था, अब मिल गया है।'

लूका १५:११-३१

उत्तर लिखें

१. रिक्त स्थानों को भरें:

यीशु ने ..... कहा ताकि लोग ..... सच्चाई को समझें।

इस कहानी से सबक

मालिक के जीवन काल में सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होने के केवल दो ही उपाय थे-वसीयत नामें लिखे जावें या सन्तानों में सम्पत्ति दान की जाए। छुटका पुत्र दूर

परदेश जाने में उतावला था जहां अपने तरीके से जीवन का आनन्द उठाए। वह अपने ही मित्रों को चुनना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि उसका पिता या भाई उसकी इच्छा में बाधा डालें। इसलिए पिता ने सम्पत्ति में से उसका हिस्सा दे दिया। उसने घर छोड़ दिया।

जब तक पैसा था "मित्र" भी उसके साथ थे। धन समाप्त होते ही "मित्र" भी उसे छोड़ गए। अन्त में वह भूखा मरने लगा। सूअर चराते हुए उसने पहिचाना कि वह कितना मूर्ख है। वह घर पश्चात्तापी मन से चल पड़ा। ताकि अपने किए पापों के लिए क्षमा मांगे। वह यह भी आशा लगाए था कि पिता उसे नौकरी देगा।

उसे आश्चर्य हुआ कि पिता ने पुत्र जैसे उसे स्वीकार कर आनन्द से घर में स्वागत किया। पुत्र इसके योग्य न था। परन्तु पिता ने पाप के होते हुए भी उससे प्रेम किया।

इस दृष्टान्त में पिता हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर के सदृश्य है। बेटे दो प्रकार के लोगों के समान हैं जो खोए हुए हैं। छुटका पुत्र उस पापी के समान है जो अपनी गलतियों के कारण दुखित है और परमेश्वर से क्षमा मांगता है।

जेठा पुत्र को अपने अच्छे होने का घमण्ड था इसलिए छोटे भाई को नीची दृष्टि से देखता था। उसने पिता के लिए काम किए परन्तु उसके कटु शब्द पिता से प्रेम प्रकट नहीं करते थे। हृदय में घर से वह उतना ही दूर था जितना उसका भाई था। वह भले कामों के घमण्डियों के समान है जो नहीं समझते कि वे भी पापी हैं जिन्हें परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है। घमण्ड, नुकताचीनी और क्षमा न करना भाई के परदेश चले जाने से कहीं अधिक बुरे पाप हो सकते हैं।

हमने भी अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा भंग कर पाप किया। हम उसके स्वर्गीय घर के योग्य नहीं हैं। परन्तु परमेश्वर दावत देता है कि हम अपने पापों से फिरें और क्षमा के लिए उसके पास आएं।

"पाप की मजदूरी मृत्यु है; परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" रोमियों ६:२३

ऐसा करें

२. छुटका पुत्र घर छोड़कर क्यों गया?

..... (क) अच्छी नौकरी पाए।

..... (ख) मानव की सेवा करे।

..... (ग) अपनी इच्छा पूरी करे।

३. वह घर क्यों लौट आया?

..... (क) और धन लेने को।

..... (ख) पिता से क्षमा और नौकरी पाने को।

..... (ग) शहर के बारे में बतलाने को।

४. किनको परमेश्वर की क्षमा चाहिए?

..... (क) सबको, सबने पाप किया।

..... (ख) केवल बुरे लोगों को।

..... (ग) जो शहर में रहते हैं।

५. रोमियों ६:२३ पद को मुखाग्र करें।

६. क्या आप ने पाप किया? क्या आप परमेश्वर की क्षमा चाहते हैं?.....

७. इन शब्दों को सीखें: "हे पिता,.....मैंने तेरे विरुद्ध पाप किया है। अब मैं पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ।" छुटके पुत्र के शब्दों को अपनी प्रार्थना बना लें। चाहे आपने कुछ भी किया हो, परमेश्वर आपको क्षमा करेगा क्योंकि वह आप से प्रेम करता है और स्वर्गीय घर में स्वागत करेगा।

हमें क्षमा करना चाहिए

यीशु ने सिखलाया यदि हम परमेश्वर की क्षमा चाहते हैं तो हमें भी दूसरों को क्षमा करना चाहिए। बदला लेना पाप है और अन्य बुराइयों की जड़ है। यह कड़वाहट, नुकताचीनी, ईर्ष्या, झगड़े और हत्या को जन्म देते हैं। जब तक हम पाप की दशा में रहते हैं, उनसे छुटकारा नहीं। हमें पाप छोड़ना है ताकि परमेश्वर उन्हें दूर करे। यीशु ने कहा:

"यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" मत्ती ६:१५

ऐसा करें

८. क्या किसी ने आप का बिगाड़ किया?
उसे क्षमा करने और भूल जाने की सहायता के
लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

पापियों को क्षमा करना

यीशु के जगत में आने के दो कारण थेः

१. हमको परमेश्वर और उसके प्रेम की शिक्षा दे।

२. हमारे अपराधों के बदले क्रूस पर मरे ताकि हमें पापों से क्षमा मिले।

इसलिए कि यीशु सबके लिए मरने को तैयार थे, जो उसके पास क्षमा पाने को आए, उसे क्षमा करने का यीशु को अधिकार है। यीशु ने अनेक पापियों को क्षमा किया और उनके जीवन को बिल्कुल बदल दिया। इनमें एक पापिन स्त्री थी जिसने प्रभु यीशु का प्रचार सुना और अपनी श्रद्धा प्रकट किया। वह शिमौन के घर पहुंची जिसने यीशु और उसके चेलों को दावत में बुलाया था। स्त्री ने यीशु के चरणों पर गिरकर अपने पापों से पश्चात्ताप किया शिमौन को आश्चर्य हुआ कि यीशु ने इस पापिनी स्त्री को अपना चरण छूने दिया। यीशु ने उससे कहाः

"किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ और दूसरा पचास रुपये धरता था। जबकि उनके पास पटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। सो उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?" शिमौन ने उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।" यीशु ने कहा, "तूने ठीक कहा।" और उस स्त्री की ओर फिर कर उसने शिमौन से कहा; "क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तूने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया, पर इसने मेरे पांव आंसुओं से भिगोए। इसलिए मैं तुझसे कहता हूं, इसके पाप जो बहुत थे क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया, पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है। और यीशु ने स्त्री से कहा, "तेरे पाप क्षमा हुए।" जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे अपने मन में सोचने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" पर यीशु ने स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया, कुशल से चली जा।"

लूका ७:४१-५०

वह स्त्री कितनी प्रसन्न थी जब यीशु ने उसे क्षमा किया। फरीसी और उसके मित्र भी इस प्रसन्नता और क्षमा को पा सकते थे परन्तु वे अपने को पापी मानने को तैयार न थे। वे अपनी श्रेष्ठता और अच्छे कर्मों पर घमण्ड करते थे।

फरीसियों ने कहा, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" कौन पापों को क्षमा कर सकता है? परमेश्वर का पुत्र-प्रभु यीशु मसीह। वह अब भी उन्हें क्षमा करता है, जो उसके पास आते हैं। हम प्रार्थना के साथ उसके चरणों के पास जाएं और मान लें कि हम पापी हैं, पापों के लिए दुखित हैं। और इससे छुटकारा पाना चाहते हैं। तब अपने हृदय में उसकी आवाज सुनेंगेः "तुम्हारे पाप क्षमा हुए। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचा लिया; कुशल से जा।" यीशु का क्षमादान हमें आनन्द, शान्ति और नया जीवन प्रदान करता है।

अथवा, हम फरीसियों के समान बहाना करें कि हम तो पापी नहीं हैं। जब तक हम बहाना करेंगे तो पापों से क्षमा प्राप्त नहीं कर सकते। हमें अपने पापों को यीशु के सामने मान लेना और उनसे क्षमा मांगना चाहिए। पहिले पापों से क्षमा मिलनी है, तभी आप अनन्त जीवन पा सकते हैं।

ऐसा करें

९. यीशु के शब्दों को मुखाग्र करें:
"तुम्हारे पाप क्षमा हुए। तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया। कुशल से जा।"

१०. क्या यीशु ने आपके पापों को क्षमा किया?
..... उसे धन्यवाद दें। सोचें:
यीशु के प्रेम को प्रकट करने में मुझे क्या करना चाहिए?